EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

"वसुधैव कुटुम्बकम को साकार करने हेतू शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में दार्शनिक मूल्यों के अंतर्भाव की आवश्यकता"

डॉ. अंशु रा. साहु
सहाय्यक प्राध्यापक,
युवा राष्ट्रसंत भैय्युजी महाराज शिक्षण (महिला) महाविद्यालय, पांढरकवडा, यवतमाल

अर्थ निज परो वैति गणनाक्षघु चेतसाम् |
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् || (1)

यह मेरा है, यह पराया है इस तरह की गणना छोटी सोच वाले रखते है | उदार चरित्रवालो के लिए संपूर्ण विश्व ही एक परिवार है | महाउपनिषद से ली गई संकल्पना एक दार्शनिक अवधारणा है | जो सार्वभौमिक भाईचारे और समस्त प्राणियों के परस्पर संबंध के विचार को पोषित करती है | यह वाक्यांश संदेश देता है की प्रत्येक व्यक्ति वैश्विक समुदाय का सदस्य है, परस्पर का सम्मान करना उनकीं गरिमा का ध्यान रखने के साथ ही सभी के प्रति दयाभाव, सहिष्णुता का भाव रखना चाहीए | यह वाक्य भारतीय दर्शन के इस विचार पर प्रकाश डालता है कि हमे सभी के साथ दया, करूणा और सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहीए और शांति व सद्भाव के साथ रहने का प्रयास करते रहना चाहीए |संसार के सभी शाश्वत स्वरूप के नियमों की खोज करना दर्शनशास्त्र का कार्य है, तो विद्यार्थीयों का सर्वांगिण विकास करना शिक्षा का काम है |

"सा विद्या या विमुक्तये |" (2)

शिक्षा वही है जो व्यक्ति को अज्ञान, अंध:कार, दु:खों और सांसारिक बंधनों से मुक्ति दिलाती है | तथा सत्व, प्रकाश, आत्मानुभूति की ओर ले जाकर जीवन को बेहतर बनाती है | शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम भावी शिक्षकों में सैद्धांतिक ज्ञान, शिक्षण कौशल और व्यावसायिक दृष्टीकोण विकसित करने के लिए डिजाइन की गई एक संरचित रूपरेखा है |

अनुसंधान समस्या की आवश्यकता :

तत्वज्ञान व शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू है | दर्शनशास्त्र यह वैचारिक व सैद्धांतिक पक्ष हैं तो शिक्षा क्रियात्मक पक्ष हैं | शिक्षा कला के दर्शनशास्त्र के बिना पूर्णता प्राप्त नहीं होती | दर्शनशास्त्र ने मानवी जीवन में कुछ मूल्यों को स्थिर किया है, जैसे – आरोग्यविषयक मूल्ये, व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक व धार्मिक मूल्ये, सांस्कृतिक मूल्ये आदी | तत्वज्ञान जीवन के ध्येय को निश्तिच करता है, जीवन मूल्ये व आदर्श प्रदर्शित करता है तथा उन्हें प्रत्यक्ष में प्राप्त करने कार्य शिक्षा करती है | वसुधैव कुटुम्बकम का दर्शन आज अत्यधिक प्रासंगिक है जो सामंजस्यपूर्ण विश्व का सृजन करने की दिशा में कार्य करता है | वह इस विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है की हमें सभी जीवों के साथ दया, करूणा और सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहीए और शांति और सद्भाव के साथ रहने का प्रयास करते रहना चाहीए | शिक्षक यह निर्माता, शिल्पकार है | बच्चों का सर्वांगिण विकास करना, संस्कृती संक्रमण व संस्कृती संवर्धन की जिम्मेदारी शिक्षकों के कांधो पर है | परंपरागत दार्शनिक विचारों का शिक्षक भविष्यकर्ता होता है | इस कार्य को यशस्वी करने के लिए उसके आचार-विचारों को दार्शनिक मूल्यों का अधिष्ठान होना अतिआवश्यक है | इसलिए शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में दार्शनिक मूल्यों, तत्वों, सिद्धांतों का समावेश होना अतिआवश्यक है |

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

अनुसंधान विषय का महत्व :

दर्शनशास्त्र व शिक्षा एक दुसरे के पूरक है | दोनों एक दुसरे के बिना अधूरे है | शिक्षाकला को दर्शनशास्त्र के बिना पूर्णता प्राप्त नहीं होती | वर्तमान की पिढ़ी भविष्य की जिम्मेदार पिढ़ी के रूप में विकसित होने वाली है, जिसका भार शिक्षकों के कांधो पर है | वसुधैव कुटुम्बकम् की संकल्पना को साकार करने हेतू उसके तत्वों, नियमों, गुणों की भावी पिढ़ी में प्रेषित करने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है, जो वे दार्शनिक विचारों, मूल्यों, सिद्धांतों को सिखकर विद्यार्थीयों में हस्तांतरित कर सकें | सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक मूल्यों का हस्तांतरण शिक्षा द्वारा हो, जो सकारात्मक, परस्पर पूरक विश्व के निर्माण में द्योतक हो |

अनुसंधान विषय :

"वसुधैव कुटुम्बकम को साकार करने हेतू शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में दार्शनिक मूल्यों के अंतर्भाव की आवश्यकता |"

अनुसंधान विषय के उद्देश्य :

शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में दार्शनिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ती का मापन करना |

शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के आधारित तत्वों का मापन करना |

शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में वसुधैव कुटुम्बकम के तत्वों तथा दार्शनिक तत्वों का मापन करना |

शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में वसुधैव कुटुम्बकम के तत्वों तथा दार्शनिक तत्वों के प्रति अभिवृत्ती का तुलनात्मक अभ्यास करना |

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में दार्शनिक मूल्यों के अंतर्भाव की आवश्यकता का मापन करना |

अनुसंधान विषय की परिकल्पना :

शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में दार्शनिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ती होगी |

शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के आधारित तत्वों के प्रति उच्च अभिवृत्ती होगी |

शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में वसुधैव कुटुम्बकम के तत्वों तथा दार्शनिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ती होगी |

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में दार्शनिक मूल्यों के अंतर्भाव की आवश्यकता के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ती होगी |

अनुसंधान समस्या का परिभाषिकरण :

वसुधैव कुटुम्बकम : "संपूर्ण विश्व एक परिवार है |" (3)

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम : "एक संरचित व नियोजित शैक्षणिक ढाँचा है, जो भावी शिक्षकों को शिक्षण कौशल, विषय ज्ञान और व्यावसायिक दृष्टीकोण विकसित करने के लिए तैयार करता है |"

दार्शनिक मूल्य : "से तात्पर्य उन आदर्शों, सिद्धांतों और विश्वासों से है जो जीवन को अर्थ, सार्थकता और सही दिशा प्रदान करते है |" (4)

अंतर्भाव : "समाहित करना (होना) |" (5)

आवश्यकता : "जरूरत" (6)

अनुसंधान विषय की व्याप्ति :

प्रस्तुत अनुसंधान में यवतमाल शहर का समावेश किया गया है |

प्रस्तुत अनुसंधान में शिक्षक प्रशिक्षण के स्नातक स्तर प्रशिक्षणार्थीयों का समावेश किया गया है |

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

प्रस्तुत अनुसंधान में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम से संबंधित तत्वों का ही समावेश किया गया है |

प्रस्तुत अनुसंधान में संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संबंधित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का समावेश किया गया है |

अनुसंधान विषय की मर्यादा :

प्रस्तुत अनुसंधान में यवतमाल शहर के अतिरिक्त अन्य किसी शहरों का समावेश नहीं किया जाएगा |

प्रस्तुत अनुसंधान में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थीयों के अलावा अन्य किसी विद्यार्थीयों का समावेश नहीं किया जाएगा |

प्रस्तुत अनुसंधान संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संलग्नित महाविद्यालयों तक ही मर्यादित होगा |

प्रस्तुत अनुसंधान में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम से संबंधित तत्वों के अतिरिक्त अन्य किसी विषय का समावेश नहीं किया जाएगा|

संबंधित पूर्व अनुसंधान व साहित्य की समिक्षा :

Jena Anshuman[7] - "Teacher Education in India : Challenges and Suggestions", Ramadevi Women's Uni., Buaneswar, 2024.

Mohsin Munira[8] – "Action Research Project in T.E. Curri : A Tool for Developing Professional Constract among Pre-Service Teacher", College of Teach. Edⁿ., (2013).

अनुसंधान पद्धती :

प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण पद्धती का उपयोग किया गया है |

जनसंख्या व न्यादर्श :

प्रस्तुत अनुसंधान की समस्या की जनसंख्या संत गाड़गेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संलग्नित सभी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थी है |

न्यादर्श :

प्रस्तुत अनुसंधान की समस्या के लिए असंभाव्यता पर आधारित सहेतूक न्यादर्शन पद्धती का अनुसरण किया गया है | प्रस्तुत अनुसंधान में यवतमाल शहर के शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय के 300 प्रशिक्षणार्थीयों का समावेश किया गया है |

अनुसंधान के साधन :

प्रस्तुत अनुसंधान में प्रशिक्षणार्थीयों की अभिवृत्ती का मापन करने के लिए अनुसंधानकर्ती द्वारा निर्मित अभिवृत्ती मापिका का उपयोग किया गया है |

प्रदत्तो का संकलन :

प्रदत्तो का संकलन करने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय तंत्रों का उपयोग किया गया है |

मध्यमान

प्रमाण विचलन

मध्यमान अंतर की प्रमाणत्रृटी

't' मूल्य

स्वाधीनता मात्रा

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

सांख्यिकीय विश्लेषण व अर्थनिर्वचन :

सारणी क्र. 4.1

वसुधैव कुटुम्बकम व दार्शनिक तत्वों के प्रति अभिवृत्ती की तुलनात्मक सारणी

चल	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाण विचलन	स्वाधीनता मात्रा	प्रमाण त्रृटी	मध्यमान में अंतर	प्राप्त 't' मूल्य	सारणी 't' मूल्य	सार्थकता स्तर	सार्थक / असार्थक
वसुधैव कुटु.	300	49.08	16.54	598	1.23	0.77	0.63	1.97	0.05	असार्थक
दार्श. मूल्य	300	49.85	13.56							

आलेख क्र. 4.1

वसुधैव कुटुम्बकम व दार्शनिक तत्वों के प्रति अभिवृत्ती का तुलनात्मक आलेख

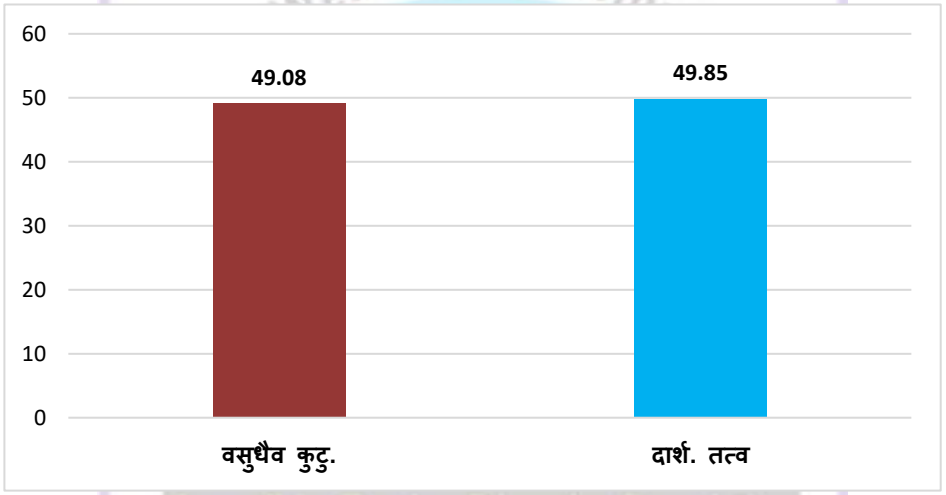

उपरोक्त सारणी के आधार पर वसुधैव कुटुम्बकम के प्रति प्रशिक्षणार्थीयों की अभिवृत्ती का मध्यमान 49.08 व दार्शनिक तत्व का मध्यमान 49.85 है | मध्यमान का अंतर 0.77 है | 598 स्वाधीनता मात्रा होन पर नमुना 't' मूल्य 0.05 स्तर पर 1.97 अपेक्षित है | प्राप्त 't' मूल्य 0.63 है जो 0.05 स्तर पर असार्थक है | इसका अर्थ यह होता है की प्रशिक्षणार्थीयों में वसुधैव कुटुम्बकम तथा दार्शनिक तत्वों के प्रति अभिवृत्ती का प्रमाण समान है |

सारणी क्र. 4.2

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में दार्शनिक तत्वों के अंतर्भाव की आवश्यकता

चल	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाण विचलन
दार्शनिक तत्व	300	152.41	20.20

उपरोक्त सारणी के आधार पर शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में दार्शनिक तत्वों के अंतर्भाव के प्रती अभिवृत्ती का मध्यमान 152.41 होकर प्रमाण विचलन 20.20 है |

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है की दार्शनिक तत्वों के अंतर्भाव की आवश्यकता का प्रमाण अधिक है |

निष्कर्ष :

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

प्रस्तुत अनुसंधान में प्राप्त प्रदत्तों के अनुसार यह निष्कर्ष निकला जा सकता है की शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत अभ्यार्थी वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना से अवगत है | तथा मानते है की इसका विकास भारतीय दार्शनिक विचारों, तत्वों, नियमों के आधार पर ही हो सकता है | इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में दार्शनिक विचारों, तत्वों का समावेश करना आवश्यक है |

सुझाव :

पाठ्यक्रम निर्मिती संस्था :

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं हेतू पाठ्यक्रम निर्मिती संस्था को यह सुझाव दिया जाता है की, भांवी शिक्षकों पर व्यक्ति, समाज, देश, विश्व को दिशा देने, विकसित समाज समुह, सांस्कृतिक संवर्धन व संरक्षण की जिम्मेदारी को समझने तथा अग्र पिढ़ी को हस्तांतरित करने हेतू दार्शनिक पहलू को समझना अति आवश्यक है | इसलिए पाठ्यक्रम में इस विषय को सम्मिलीत करना आवश्यक है |

अग्र अनुसंधान हेतू दिशा निर्देश :

माध्यमिक विद्यालय में वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना को विकसित करने हेतू किए जाने वाले प्रयासों का शोध |
उच्च माध्यमिक विद्यालयों में वसुधैव कुटुंम्बकम की संकल्पना जनजागृती का अनुशीलन |
उच्च शिक्षण संस्थाओं में वसुधैव कुटुम्बकम की जनजागृती का अनुशीलन |
उच्च शिक्षण संस्थाओं में वसुधैव कुटुम्बकम विषयक अभिरूची का अभ्यास |

संदर्भ ग्रंथ सूची :

हिंदी ग्रंथ :

भाई जोगेन्द्रजीत (2001) – 'शिक्षा मनोविज्ञान', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
शर्मा आर. ए. (2004) – 'शिक्षा अनुसंधान', सुर्या प्रकाशन , मेरठ.
वाजपेयी शंभु (1986) – 'हिन्दी शब्द सागर', वाराणसी.
रामशकल पाण्डेय (2001) – 'शिक्षा दर्शनशास्त्र', सुर्या प्रकाशन , मेरठ.

मराठी ग्रंथ :

आगलावे डॉ. प्रदिप (जाने. 2002) – 'संशोधन पद्धती शास्त्र व तंत्रे', विद्या प्रकाशन, नागपूर.
कन्हाडे बी. एम. (जुलै 2007) – 'शास्त्रीय संशोधन पद्धती', पिंपळापुरे प्रकाशन, नागपूर.
घोरमोडे डॉ. कु. यु., घोरमोडे डॉ. कला (5 सप्टें. 2008) – 'उद्योन्मुख भारतीय समाजातील शिक्षण', विद्या प्रकाशन, नागपूर.

संकेतस्थळ :

www.ijfmr.com.
nalurenurture.org.
https://tripurauniv.ac.in.
hindiamrit.com.
bvicam
Youtube.ICMAI.